International Journal of Applied Research 2015; 1(11): 453-455

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(11): 453-455
www.allresearchjournal.com
Received: 16-08-2015
Accepted: 19-09-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हि प्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हि प्र

मैथिल कोकिल विद्यापति–व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. शिवदत्त शर्मा

विद्यापति की गणना आदि काल के महान् कवियों में की जाती है। कुछ आलोचक इन्हें आदि काल का कवि मानने के पक्ष में नहीं है।परन्तु नवीनतम शोधों के अनुसार इन्हें आदि काल कें ही कवि माने जाने में सभी एकमत हैं।उन का काल निर्धारण उनकी काव्य गत विशेषताओं से सरल हो सका हैं। विद्यापति संस्कृत के उच्च कोटि के विद्वान थे। अवहट्ठ और मैथिली भाषा पर भी उनका पूर्ण अधिकार था। 1

विद्यापति के जन्म के सम्बन्ध में निश्चित तिथि की प्रामाणिकता के विषय में सन्देह है।अनेक विद्वान इस तथ्य से सहमत हैं कि मिथिला के राजा शिवसिंह विद्यापति से दो वर्ष बडे थे इसलिए उनका जन्म 1340 ई में होना असंदिग्ध है। अधिकांश विद्वान इसी तिथि को मान्यता देते हैं।

कीर्तिलता ग्रन्थ में विद्यापति ने कीर्ति सिंह का गुणगान किया हैं शिवसिंह की आज्ञा से ही कीर्ति पताका,पुरुष–परीक्षा और गोरक्ष विजय जैसे ग्रन्थ लिखे। विद्यापति के अनेक पदों में शिवसिंह का नाम प्रयुक्त हुआ हैं।राजा शिवसिंह और कवि विद्यापति में मित्रता होने के कारण शिव सिंह ने विद्यापति की जन्म भूमि विसपी गांव को उन्हें दान में दे दिया था। 2 इस सम्बन्ध में संसकृत में लिखा ताम्रपत्र भी दिया गया था जिसमें लिखा था कि भविष्य में यदि कोई हिन्दुराजा या मुस्लमान बादशाह इस गांव से राज्यकर वसूल करेगा तो उस हिन्दु राजा को गोहत्या का और मुसलमान राजा को सूअर वध का पाप लगेगा।

विद्यापति का कृतित्व–विद्यापति के गौरव को प्रकाशित करने वाली अनेक रचनाएं हैं। इन्हे भाषा के आधार पर इस प्रकार बांटा जा सकता है।

संस्कृत भाषा के ग्रंन्थ–

1भू परिक्रमा 2पुरुष परीक्षा 3 लिखनावली 4 शैव सर्वस्वसार 5 गंगा वाक्यावली 6 विभागसार 7 वर्ष कृत्ये 8 दान वाक्यावली 9 गयापतलक 10 दुर्गा भक्ति तरंगिणी 11 प्रमाण भूत पुराण संग्रह 12 गोरक्ष विजय हिन्दी–संस्कृत में रचित एकांकी

अवहट्ठ भाषा में रचित ग्रन्थ

1 कीर्ति लता 2 कीर्तिपताका

हिन्दी में विद्यापति का नाम अमर करने वाली उनकी रचना मैथिल में रचित पदावली है। 3

संस्कृतभाषा के अतिरिक्त अवहट्ठ एवं मैथिली में रचित रचनाएं भी बहुत महत्व रखतीं हैं।अवहट्ठ में लिखित रचनाएं कीर्तिलता और कीर्तिपताका भी बहुत सुन्दर हैं। कीर्तिसिंह के पौत्र शिवसिंह और उनकी रानी लखिमा देई के आश्रित होने के कारण उनकी प्रशंसा में कीर्तिपताका की रचना की गई।

श्रृंगार के अद्वितीय कवि– साहित्य जगत में विद्यापति अपनी कोमल कान्त पदावली के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके पदों में उनकी वास्तविक काव्य प्रतिभा के दर्शन होते हैं। उनके पद मुख्यतः श्रृंगार सम्बन्धी है फिर भी उन्होंने भक्ति परक अनेक पदों की रचना की है। शक्ति,शिव,और गंगा की स्तुति में ऐसे पदों की रचना की गई हैं।

पदावली एक और उत्कृष्ट रचना है जो मैथिली में लिखी गई है। सबसे अधिक लोकप्रिय रचना यही हैं। पदावली में कृष्ण राधा विषयक श्रृंगार के पद हैं। इस आधार पर उन्हें राधा–कृष्ण विषयक श्रृंगारी काव्य के जन्म दाता के रूप में भी जाना जाता है। 4

विद्यापति के श्रृंगारी कवि होने का मुख्य कारण यह है कि विद्यापति एक दरबारी कवि थे ।उवके प्रत्येक पद पर दरबारी वातावरण की छवि साफ दिखाई देती है। विद्यापति ने जिस राजा शिवसिंह एवं रूपनारायण को प्रसन्न करने के लिए पदों की रचना की थी वे बहुत रईस मिजाज के दरबारी कवि थे।दरबारी कवि होने के कारण विद्यापति अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा में रचनाएं करते थे और दरबारी कविता में रसराग और श्रृंगार अनिवार्य तत्व के रूप में कविता का अंग था। यही कारण है कि उनकी कविता में अतिशय श्रृगार के दर्शन होते हैं जो कभी कभी अपनी सीमा से बहुत आगे निकल गया हैं कविता श्रृगार के भार के नीचे दब सी गई है। 5

विद्यापति भक्त की अपेक्षा कवि अधिक हैं फिर भी उनके साहित्य में कुछ पद भक्ति परक मिलते हैं।विद्यापति के आराध्य देव श्री कृष्ण प्रतीत होते हैं। विद्यापति वैष्णव भक्त नहीं थे, न ही वे एकेश्वरवादी थे तथा नही उनके शाक्त होने का कोई प्रमाण मिलता है।प्राचीन मान्यता के अनुसार विद्यापति ने ग्रन्थ के आरम्भ में श्री गणेश आदि की वन्दना की है। उनके भक्ति सम्बन्धी पदों में राधा–कृष्ण और शिव–गौरी सम्बन्धी पद विशेषतः उल्लेखनीय हैं। उनके भक्ति परक पदों में आत्मा की परमात्मा में विलय अथवा मिलन की उत्कट इच्छा का वर्णन बडा मार्मिक एवं मनोहारी है। विद्यापति की पदावली में श्री कृष्ण जी की बाल लीलाओं का सुन्दर वर्णन है।

श्रृंगार रस निरूपण की उडान में विद्यापति इतना आत्म विभोर हो गए हैं कि कोई उन्हें श्री कृष्ण का भक्त मानने को तैयार नहीं है। उन्होंने कृष्ण एवं राधा को सामान्य व्यक्ति के रूप में चित्रित कर दिया है जो एक भक्त से अपेक्षा नहीं की जा सकती ।पदावली में कृष्ण कामी नायक ,एवं राधा को मुग्धा नायिका के रूप में चित्रित किया गया है। कवि ने श्रृगार के सभी अवयवों–भाव, अनुभाव, तथा संचारी भावों का सांगोपांग वर्णन किया है। प्रकृति वर्णन भी उद्दीपन विभाव के रूप मे किया गया है। विद्यापति ने नायिका के वक्षस्थल पर पडी हुई मोतियों की माला का जो वर्णन किया है, उससे कवि की भावुकता का परिचय मिलता है। विद्यापति ने अपने काव्य में विरह में तडपती नायिका का मनोरम चित्र प्रस्तुत किया है। विद्यापति ने अपनी रचना कीर्तिपताका में अतिश्योक्ति पूर्ण एवं अस्वाभाविक सा प्रतिभासित होने वाला श्रृंगारिक चित्रण किया है। कवि की दृष्टि में कृष्ण और राधा श्रृंगार रस के नायक–नायिका हैं। विद्यापति ने नवयौवना, मुग्धा, प्रगल्भा, नवोढां, खंडिता, मानिनी आदि नायिकाओं के अपूर्व चित्र उतारे हैं। विद्यापति मूलतः श्रृंगार के कवि हैं। उन्होंने नारी के रूप भाव अनुभाव आदि का जो चित्रण किया है, वह बेजोड है। विद्यापति इस तरह कोई भक्त कवि नहीं लगते क्योकि कोई भी भक्त कवि अपने आराध्य का चित्रण इतने श्रृंगार पूर्ण एवं नग्न रूप में प्रस्तुत नहीं करेगा जिस प्रकार विद्यापति ने प्रस्तुत किया है।

विद्यापति के पदों में राधा–कृष्ण की लीलाओं के वर्णन अलौकिक हैं। डॉ ग्रियर्सन ने लिखा है कि विद्यापति के पद लगभग सबके सब भजन हैं। जिस प्रकार सोलोमन के गीतों को ईसाई पादरी पढा करते हैं उसी प्रकार हिन्दु भक्त भी विद्यापति के चमत्कार पूर्ण पदों को पढा करते हैं और जरा भी काम भावना का अनुभव नहीं करते उनकी रचनाएं राधा और कृष्ण के पवित्र प्रेम से ओतप्रोत हैं। राध–कृष्ण के पदों में भक्ति–भावना की उदात्तता एवं गम्भीरता का अभाव है। उनके इन पदों में वासना की गन्ध है तथा उनमें धार्मिकता, दार्शनिकता, आध्यात्मिकता, आदि रहस्यात्मकता की, खोज करना रेत में से तेल निकालने का प्रयास करना है।

विद्यापति को कुछ विद्वान शैव भक्त भी मानते हैं। विद्यापति ने शिव–पार्वती सम्बन्धी पदों ही भी रचना की है। उन्होंने संस्कृत,अवहट्ठ,एवं अपनी लोकभाषा मैथिली में भी समान अधिकार से रचना की है। विद्यापति का यश और कार्ति मुख्यतः पदावली के ही कारण है। इस कृति का साहित्य मे बडा सम्मान है। 6

शिव–गौरी सम्बन्धी पदों में यद्यपि भक्ति कालीन सूर, तुलसी, मीरा, आदि कवियों जैसी तल्लीनता का अभाव है तथापि उसमें वासना का रंग नहीं है और उन्हें भक्ति की कोटि में रखा जा सकता है। उन्होंने गंगा के प्रति भी श्रद्धा व्यक्त की है। विद्यापति के समय शैव–भक्ति का प्रचार प्रसार जोरों पर था। अनेक शिव मन्दिरों में भूतनाथ की आराधना की जाती थी। विद्यापति की शिवभक्ति सम्बन्धी भावना कई रूपों में व्यक्त हुई है। शिव–गौरी का गुणगान इनमें प्रमुख है।विद्यापति राधा–कृष्ण के श्रृंगार–वर्णन से विरत हो कर अपने कुल–देवता शिव शंकर की ओर झुक गए थे। विद्याापति जी के एक पद में शिव–मूर्ति और नारीसौंदर्य का बहुत ही सजीव वर्णन किया गया है। 7

निस्सन्देह विद्यापति मूलतः श्रृंगारी कवि थे, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्होंने केवल प्रेम, सौंदय, पर ही काव्य रचना की है। वस्तुतः उनकी पदावली प्रकृति–वर्णन की दृष्टि से भी उत्कृष्ट रचना कही जा सकती है। कवि ने वसंत खण्ड में तो प्रकृति का मानवीकरण रूप सुन्दर व सजीव चित्रण किया है। उदाहरण के लिए निम्न पंक्तियों को देखिए जिसमें कवि ने वसन्त को दूल्हा मानकर उसके आगमन तथा स्वागत का वर्णन किया है–

माइ हे! आज दिवस पुनमन्त।
करि चुमाओन राय बसन्त।
सम्पुन सुधानिधि दधिभल भेल।
भमि भमि भमिरिह हंकारइ देल। 8

इसी प्रकार कवि ने पदावली में प्रकृति के उद्दीपन रूप में ,पृष्ठभूमिके रूप में, दूती रूप में ,आलम्बन रूप मे, उपदेशिका रूप में भी वर्णन किया है। संयोग अवस्था में प्रकृति जहां नायक–नायिका के मन में उल्लास ,उमंग ,रति ,व काम भावना का संचार करती है ,वहीं वियोगावस्था में वह सुखदायी प्रकृति अब दुखदायी बन जाती है।राधा की विरह–वेदना को बढाने वाली प्रकृति के उद्दीपन रूप का चित्रण करते हुए कवि कहता है–

कुलिस कत सत पात मुदित,
मयूर नाचत मातिया।
मत्त दादुर डाक डाहुक,
फटी जावत छातियां। 9

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पदावली में सौंदर्य एवं प्रेम के साथसाथ प्रकृति का भी सुन्दर तथा सजीव वर्णन हुआ है।

उनके भक्ति परक पदों में भी उनकी काव्य प्रतिभा के दर्शन होते है। ग्रियर्सन, कुमार स्वामी आदि ने उनके पदों में राधा को जीवात्मा और कृष्ण को परमात्मा का प्रतीक माना है। उनकी श्रीकृष्ण की बन्दगी की एक बानगी देखिए–

माधव हम परिनाम निराला,
तुहुं जग.तारन दीन दयामय, अतय तोहर बिसवासा।
भनइ विद्यापति शेष समन भय, तुअ बिनुगति वहि आरा।
आदि अनादिक नाथ कहा ओसि ,अब तारन भार तोहारा।

विद्यापति का महत्व–भारतीय साहित्य में विद्यापति का नाम अमर है। उन्होंने पद परम्परा का प्रवर्तन किया। उन्होंने कृष्ण काव्य की उस परम्परा को आगे बढाया जिसकी उद्भावना संस्कृत के प्रसिद्ध कवि जयदेव ने की थी।जयदेव ने अपने गीत गोबिन्दम्, में राधाकृष्ण की लौकिक प्रेम लीलाओं का वर्णन किया है।विद्यापति ने इसी प्रेम का अनुसरण करते हुए परकीया–प्रेम और आध्यात्मिक प्रेम का चित्रण बडे ही मनोरम ढंगसे किया है।विद्यापति रससिक्त कवि थे तथा उन्होंने राधाकृष्ण की प्रेंम लीलाओं का रससिक्त वाणी में वर्णन किया है। उनकी श्रृंगारिकता को देखकर विभिन्न विद्वानों ने उनकी आलोचना भी की है। 10

विद्यापति में काव्यानुभूति के साथसाथ अभिव्यक्ति पर भी पूरा अधिकार था। वे शब्दों के चितेरे थे। उनके शब्दों में अभिव्यक्ति एवं अर्थ को खोलने की ताकत थी। कवि ने इसी सन्दर्भ में स्वयं लिखा है– बाल चन्द्रमा और विद्यापति की भाषा को दुर्जनों की हंसी नहीं लग सकती। वह चन्द्रमा तो परमेश्वर शिव के सिर पर शोभायमान है,और विद्यापति की यह भाषा निश्चय ही नागर जनों के मन को मोह लेती है। 11

विद्यापति के द्वारा संस्कृत ग्रन्थों से उनकी भाषा के संस्कृत अधिकार का भली भान्ति आभास हो जाता हे।उन्होंने देशी भाषा की मिठास को पहचाना तथा उसी में अपनी एक अद्भुत रचना साहित्य जगत को दी।उनके माधुर्य को देख कर ही उन्हें मैथिल

कोकिल कहा जाता है।इस तरह कहा जा सकता है कि विद्यापति की साहित्य को महत्व पूर्ण देन है। विद्यापति के गीत सौन्दर्य के सार हैं और ऐन्द्रिय प्रेम के ललित प्रसून हैं। विद्यापति की पदावली की एक अन्य विशेषता यह है कि उसमें गीति–तत्व का समावेश है। उनके सभी पदों में गीति–काव्य के सभी आवश्यक तत्व–संक्षिप्तता, वैयक्तिकता, भाव.एकरूपता, रागात्मकता शैलीगत सुकुमारता संगीतात्मकता आदि विद्यमान हैं।

सन्दर्भ सूचि–

1. डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 112
2. उपरोक्त
3. शिवदान सिंह चौहान हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष पृ 76
4. डॉ बच्चन सिंह आधुनिक हिन्दी साहित्य पृ 67
5. डॉ हरीश चन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य का आदिकाल पृ 56
6. डॉ भोला नाथ तिवारी हिन्दी साहित्य पृ 34
7. डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 23
8. विद्यापति पदावली
9. उपरोक्त
10. डॉ गणपति चन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास पृ 82
11. डॉ राम खिलावन पाण्डे हिन्दी साहित्य का नया इतिहास पृ 32